एक्सपर्ट्स ने रखे विचार

विज्ञान के विचार को आमजन तक पहुंचाना है आवश्यक

सीरी के इंक्यूबेशन सेंटर में साइंस मीडिया रिसर्च कार्यशाला शुरू

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

जयपुर ◆ विज्ञान का उद्देश्य आमजन के जीवन को सुधारना होता है। इसलिए विज्ञान की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए लोकप्रिय भाषा में लिखने वाले विज्ञान संचारकों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के डिविजन, राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद की ओर से सीरी के इंक्यूबेशन सेंटर में बुधवार से तीन दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत की गई। इस कार्यशाला में पत्रकारिता से जुड़े विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, शोध छात्रों और विज्ञान लेखन से जुड़े अनुभवी लोगों को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप में नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट, इंडिया के प्रेसीडेंट अशोक मलिक मौजूद रहे। इस अवसर पर बीआइएसआर जयपुर के कार्यकारी निदेशक पी. घोष एवं राजस्थान पत्रिका के असिस्टेंट एडिटर हरीश पाराशर ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर शिरकत की। वैज्ञानिक दृष्टिकोण सोसायटी जयपुर के सहयोग से आयोजित हो रही वर्कशॉप के पहले दिन कुल चार सत्र हुए। प्रथम सत्र में प्रो. पी घोष ने वैज्ञानिक शोध एवं नवाचार में प्रभावी संचार में मीडिया की भूमिका पर व्याख्यान दिया। विज्ञान के क्षेत्र में होने वाली उपलब्धियों का लाभ जब तक आमजन को उनकी भाषा में नहीं बताया जाएगा, तब तक इन उपलब्धियों का लाभ उन्हें नहीं मिल पाएगा।

दूसरे सत्र में अशोक मलिक ने शोध के उत्थान में मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक समाज से समाज का संवाद जरूरी है। उन्होंने कहा कि शोध पत्र पत्रिकाओं पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों तक ही सीमित न रहें, इन्हें जनमानस तक पहुंचाना होगा।

भाषा हो सरल

तृतीय सत्र में डॉ. श्याम नारायण मिश्र ने विज्ञान लेखन के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करते हुए फीचर लेखन, समाचार लेखन, शोध पत्र और आर्टिकल लेखन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि शोध कार्यों की जानकारी एवं उनके लाभ आमजन तक पहुंचाना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। विज्ञान संचारक शोधकार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में आम जनता को उनकी भाषा में जानकारी उपलब्ध कराएं।